विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १६ : अंक २० : नई दिल्ली : २२-२८ अगस्त २०१०

परम पावन आचार्यप्रवर आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ६६, सर्व ११८ सानंद सरदारशहर में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर का स्वास्थ्य पूर्णरूपेण ठीक है। चातुर्मास के साथ तपस्याओं का क्रम भी प्रारंभ हो गया है। विभिन्न क्षेत्रों से छोटी-बड़ी तपस्याओं के समाचार मिल रहे हैं। पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में यहां सभी कार्यक्रम व्यवस्थित रूप से चल रहे हैं। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरंतर जारी है।

संबोध

क्षांति

–आचार्य महाश्रमण

कषाय का पहला प्रकार है क्रोध। उसको जीतने का उपाय है क्षांति की साधना। साधु के लिए दसवेआलियं में कहा गया है **पुढविं समे मुणी हवेज्जा**। संस्कृत व्याकरण में पृथ्वी को सर्वसहा और मुनि को सर्वसह कहा गया है। कितना गरिमापूर्ण विशेषण मुनि के लिए प्रयुक्त हुआ है। यानी मुनि सब कुछ सहन करने वाला हो। जैसे पृथ्वी सहन कर लेती है, भले कोई उस पर थूके, कोई उस पर कूदे। एक बात जरूर है कभी-कभी पृथ्वी में कंपन होता है, जिसे भूकंप कहा जाता है। इस दृष्टि से उसे असहिष्णु कहा जा सकता है, परन्तु सामान्यतया उसे सर्वसहा ही कहा गया है।

जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियां आ जाती हैं। उन दोनों को सहना मुनि का धर्म है। जैसा कि उत्तराध्ययन में कहा गया है, जिसे हम अर्हत वंदना में गाते भी हैं

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥
अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासीचंदणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥

लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा, मान-अपमान में सम रहने वाला। इहलोक और परलोक में अनासक्त, वसूले से काटने और चन्दन लगाने पर तथा आहार मिलने या न मिलने पर सम रहने वाला।

क्षांति के प्रयोग का एक स्थान है सामूहिक जीवन। सामूहिक जीवन में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में प्रकृति की भिन्नता भी देखने को मिलती है। वहां संघर्ष होने की संभावना भी रहती है। यदि प्रकृति भिन्नता में सामंजस्य बिठा लिया जाए तो सामूहिक जीवन सुखद बन जाता है। जहां सामंजस्य नहीं बिठाया जाता और खींचतान चलती है, वहां सामूहिक जीवन कष्टप्रद बन जाता है।

सामूहिक जीवन में न अति रागात्मकता हो और न संघर्ष हो तो 'गण में रहूं निरदावै एकलो' उक्ति चरितार्थ हो जाती है। एक-दूसरे को सहना चाहिए। गलती पर मौके पर कहना भी चाहिए और शान्ति से रहना चाहिए। यह फार्मूला व्यवहारगत हो जाए तो समूहबद्ध जीवन सानंद बन जाता है।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

दिल्ली और हरियाणा : कतिपय प्रसंग (८३१)

झलकियां त्रिदिवसीय आयोजन की

- मर्यादा महोत्सव के तीनों ही दिनों के कार्यक्रम सुव्यवस्थित रहे। निर्धारित समय पर कार्यक्रमों का शुभारंभ एवं समापन हुआ। इतने बड़े कार्यक्रमों में समय की नियमितता सुखद और प्रेरणादायक रही।
- लोकसभा में अनुशासन का सूत्र अपने हाथ में रखनेवाले लोकसभाध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल पर जब समय का अनुशासन किया गया तो उपस्थित जनसमूह को अच्छा लगा और आश्चर्य भी हुआ।
- श्री पाटिल ने निर्धारित समय में अपना वक्तव्य सम्पन्न करने की बात को अपनी कसौटी मानते हुए कहा मेरी परीक्षा ली जा रही है। पर मैं विश्वास दिलाता हूं कि इस परीक्षा में पास (उत्तीर्ण) होऊंगा।
- मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी.एन. शेषन को मात्र तीन मिनट का समय दिया गया। उन्होंने निर्धारित सीमा का अतिक्रमण नहीं किया।
- मर्यादा यात्रा की संयोजना बहुत व्यवस्थित थी। अध्यात्म साधना केन्द्र से मर्यादा समवसरण तक दोनों ओर केन्द्रीय युवा वाहिनी के सदस्य निर्धारित गणवेश में दर्शकों के आकर्षण के केन्द्र बन गए।
- पदाभिषेक कार्यक्रम में देश के राजनेता, विदेशी अतिथि एवं चिन्तनशील प्रबुद्ध लोगों के साथ तेरापंथ समाज के युवा वर्ग में विशेष उत्सुकता परिलक्षित हो रही थी।
- पदाभिषेक कार्यक्रम ठीक बारह बजकर पन्द्रह मिनट पर प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में मैंने परमेष्ठी गीत श्रद्धा विनय समेत णमो अरहंताणं का संगान किया।
- पदाभिषेक की समग्र प्रक्रिया में केवल सात मिनट का समय लगा। वह प्रक्रिया इस प्रकार थी
    - सन्तों द्वारा महाप्रज्ञजी को वर्धापित कर ससम्मान मेरे निकट लाना।
    - महाप्रज्ञजी द्वारा तीन बार विधिवत वन्दना करना।
    - नियुक्ति पत्र का वाचन कर उसे महाप्रज्ञजी को सौंपना।
    - मंत्रोच्चारण के साथ आध्यात्मिक अभिषेक (तिलक) करना।
    - मंत्रोच्चारण के साथ शक्तिसंप्रेषण करना।
    - मेरे द्वारा स्वयं पछेवड़ी ओढ़कर उसे महाप्रज्ञजी को ओढ़ाना।
    - मेरे माध्यम से महाप्रज्ञजी द्वारा संकल्प ग्रहण करना।
- तेरापंथ धर्मसंघ में हुए आज तक के कार्यक्रमों में पदाभिषेक कार्यक्रम में सर्वाधिक उपस्थिति आंकी गई।
- पदाभिषेक समारोह को दिल्ली के सभी प्रमुख हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषायी समाचारपत्रों ने प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया। राजधानी दिल्ली से प्रकाशित अनेक प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्रों ने मुखपृष्ठ पर अभिषेक के क्षणों को जीवन्त बनाने वाले फोटो प्रकाशित किए। कुछ पत्रों के नाम इस प्रकार हैं नवभारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान, जनसत्ता, पंजाब केसरी, राष्ट्रीय सहारा, वीर अर्जुन, राजस्थान पत्रिका, दैनिक विश्वमित्र, दैनिक जागरण, इंडियन एक्सप्रेस, द सन्डे टाइम्स, नेशनल हेराल्ड, द टाइम्स ऑफ इंडिया, पेट्रियट आदि।
- जनसत्ता, इंडियन एक्सप्रेस, नवभारत टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया आदि प्रतिष्ठित पत्रों ने पदाभिषेक के मंगल प्रसंग पर विशिष्ट परिशिष्ट प्रकाशित किए। राजस्थान पत्रिका, गुजरात समाचार, दैनिक विश्वमित्र, नई दुनिया, नवभारत, स्वदेश, पाञ्चजन्य आदि दैनिक समाचार पत्रों में इस अवसर पर विशेष आलेख प्रकाशित हुए।
- प्रेस ट्रस्ट, वार्ता आदि न्यूज एजेंसियों ने इस कार्यक्रम से पहले और बाद में विस्तार से समाचार प्रसारित किए। वे समाचार देश के प्रायः सभी भाषाओं के पत्रों में प्रमुखता से छपे।
- जी.टी.वी., दूरदर्शन, जैन टी.वी., बी.बी.सी., पी.टी.आई., वार्ता आदि एजेंसियों के प्रतिनिधियों सहित

www.terapanthinfo.com

सौ से अधिक संवाददाता इस कार्यक्रम की कवरेज के लिए स्वयं उपस्थित हुए। इसी कारण पदाभिषेक समारोह के समाचार इंडिया एब्रोड आदि अनेक विदेशी पत्र-पत्रिकाओं ने सचित्र प्रकाशित किए।

- जैनभारती, युवादृष्टि, प्रेक्षाध्यान (मासिक), अणुव्रत (पाक्षिक), तेरापंथ टाइम्स (साप्ताहिक) आदि पत्रिकाओं के पदाभिषेक के सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण सामग्री से भरे अंक भेंट में प्राप्त हुए।
- प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव इस कार्यक्रम में आनेवाले थे, पर किसी कारणवश नहीं आ सके। इस बात को पत्रकारों ने गंभीरता से लिया। अंग्रेजी के 'बिजनेस स्टैण्डर्ड' ने राव साहब का कार्टून बनाकर उस पर लिखा I Can't stand it उस न्यूज को विस्तार देते हुए लिखा गया राव साहब इस कार्यक्रम में कैसे आते? यह तो सत्ता-हस्तान्तरण का कार्यक्रम था। वे आते तो उनके सामने संकट खड़ा हो जाता।
- आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ के संस्थापक बाबा नागपाल के आत्मीयतापूर्ण सहयोग से स्थान की भरपूर सुविधा मिली। वहीं समवसरण, वहीं मर्यादानगर और उसी परिसर में भोजनालय। सब कुछ सुविधाप्रद था। यात्रियों की सुविधा के लिए बाबा ने भूमिगत मार्ग भी खुलवा दिया, जिससे वाहनों तथा आगन्तुकों की अपार भीड़ होने पर भी यातायात जाम नहीं हुआ।
- बाबा नागपाल ने पदाभिषेक की खुशी में आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ के सभी कर्मचारियों को लड्डू बांटे तथा बर्तन उपहार में दिए। उन्होंने पारमार्थिक शिक्षण संस्था की प्रत्येक बहन को एक-एक शॉल उपहृत किया।
- दिल्लीवासियों ने दिल्ली के प्रमुख चार स्टेशनों पर आगन्तुक यात्रियों का स्वागत किया। दिल्ली जैसे महानगर में यह काम सचमुच ही अत्यन्त कठिन था, पर कार्यकर्ताओं की सक्रियता से संभव हो गया।
- दिल्ली प्रवास व्यवस्था समिति तथा दिल्ली श्रावक समाज की जागरूकता विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। हर कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं की सूझबूझ, व्यवस्थाकौशल और श्रमनिष्ठा बोल रही थी।

अध्यात्म साधना केन्द्र से विहार

७ फरवरी १९९५। माघ शुक्ला अष्टमी। अध्यात्म साधना केन्द्र में लगभग नौ महीनों का प्रवास सानन्द सम्पन्न हुआ। ६ मई १९९४ को हम दिल्ली पहुंचे थे। १५ मई को अध्यात्म साधना केन्द्र में प्रवेश हुआ। यहां के प्रदूषण रहित, शान्त और अध्यात्म के प्रयोगों से अनुप्राणित वातावरण में हमारा दीर्घकालिक प्रवास हुआ। दैनिक प्रवचनों एवं समय-समय पर आयोजित विशेष कार्यक्रमों से जनता लाभान्वित हुई। दिल्ली के विभिन्न उपनगरों से अच्छी संख्या में लोगों का यातायात होता रहता था। श्रद्धालु श्रावक समाज के अतिरिक्त इस प्रवास काल में अनेक राजनेता, समाजसेवी, पत्रकार, लेखक, विचारक, धर्माधिकारी आदि प्रायः सभी वर्गों के लोग सम्पर्क में आए। बाहर से आनेवाले यात्रियों का प्रवाह भी निरन्तर चालू रहा। शहर से बहुत दूर महरौली के एकान्त स्थान में भी हम सदा भीड़ से घिरे रहे। यही हमारी नियति है, ऐसा सोचकर हमने भीड़ में भी एकान्त साधने का प्रयास किया। स्वास्थ्य की स्थिति सामान्यतः ठीक ही रही।

लगभग सवा दस बजे हम अध्यात्म साधना केन्द्र से प्रस्थान करनेवाले थे। इसी बीच सूचना मिली कि आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ के संस्थापक सन्त नागपाल मिलना चाहते हैं। बाबा के अनुरोध पर हम मन्दिर के परिसर में गए। मन्दिर के अधिकारियों ने अपनी पारम्परिक रीति से स्वागत-सम्मान किया। कुछ समय तक बाबा नागपाल के साथ सौहार्दमय वातावरण में वार्तालाप हुआ। बाबा से विदा ली। अध्यात्म साधना केन्द्र से विहार किया। आठ किमी. लम्बे मार्ग में हजारों लोगों ने हमारा अनुगमन किया। हमारा प्रवास पृथ्वीराज रोड़ पर स्थित प्रसिद्ध उद्योगपति ओमप्रकाशजी जिन्दल की कोठी पर हुआ। रातभर वहीं रहे। जिन्दल परिवार ने अपने सम्बन्धियों और परिचितों के साथ सत्संग का लाभ उठाया।

८ फरवरी को प्रातः हम जिन्दल कोठी से चले। कनाट प्लेस में सी.आर. भंसाली की ऑफिस में कुछ समय लगाया। वहां से अणुव्रत भवन पहुंचे। आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म साधना केन्द्र से लाजपतनगर गए

www.terapanthinfo.com

थे। वहां दिल्ली प्रवासी, मोमासर निवासी मोहनलालजी सेठिया के मकान में रात्रिकालीन प्रवास व प्रवचन किया। वे भी आज अणुव्रत भवन आ गए। अणुव्रत भवन में आयोजित कार्यक्रम में अमेरिका की हवाई यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर डॉ. ग्लेन डी पेज को अणुव्रत पुरस्कार दिया गया। अच्छा समारोह हुआ।

जय तुलसी फाउण्डेशन नैतिक मूल्यों में विश्वास रखनेवाले और उन्हें जीनेवाले व्यक्तियों को प्रतिवर्ष अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित करता है। इस पुरसकार की श्रृंखला में राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा, वैज्ञानिक डॉ. आत्माराम, सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार, लोकसभा के अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल, श्री शिवाजी भावे जैसे व्यक्तित्त्व जुड़ चुके हैं। अब तक ग्यारह व्यक्तियों को यह पुरस्कार दिया जा चुका है। प्रो. ग्लेन डी पेज को बारहवां पुरस्कार दिया गया। सोहनलाल गांधी ने कार्यक्रम का संचालन किया। मुनि महेन्द्रकुमार ने प्रो. ग्लेन डी पेज का परिचय दिया। मांगीलाल सेठिया और सी. आर. भंसाली ने पुरस्कार देने की प्रक्रिया सम्पन्न की।

डॉ. ग्लेन डी पेज ने आभार प्रकट करते हुए हिन्दी भाषा में कहा 'गुरुदेव तुलसी विश्व के महान सन्त हैं, जो एक-एक व्यक्ति की नैतिक चेतना जगाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आज विश्व को अणुव्रत जैसे आन्दोलन की अधिक जरूरत है। मैं जब से आपके सम्पर्क में आया हूं, आपके व्यक्तित्व, विचारों और मिशन ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मैं जय तुलसी फाउण्डेशन को धन्यवाद देता हूं, जिसने अणुव्रत पुरस्कार के लिए मेरे नाम को योग्य समझा।'

अपराह्न में अणुव्रत भवन से विहार कर हम दरियागंज पहुंचे। वहां मांगीलाल सेठिया के भवन में रात्रिकालीन प्रवास किया। सेठिया परिवार को सात्विक आह्लाद हुआ। वहां से हम शाहदरा गए। ९ एवं १० फरवरी, इन दो दिनों में शाहदरा के तीन क्षेत्रों का स्पर्श किया। ९ फरवरी को प्रातः हम सूर्यनगर रहे। वहां जय तुलसी फाउण्डेशन द्वारा एक स्कूल का अधिग्रहण हुआ। विशिष्ट निर्माण की दिशा में फाउण्डेशन के चरण बढ़े। मध्याह्न में विवेक विहार गए। रात्रि में वहीं रहे। दूसरे दिन प्रातःकाल का प्रवचन वहीं हुआ। सायंकाल हम गांधीनगर पहुंचे। रात्रिकालीन प्रवास और प्रवचन गांधीनगर में हुआ।

११ फरवरी को प्रातः हम सब्जी मंडी स्थित कठोतिया भवन में गए। स्वागत कार्यक्रम में अनेक व्यक्ति बोले। मैंने अपने प्रवचन में कहा 'यह वही सब्जीमंडी है, वही कठोतिया भवन है, जहां हम पहली बार बयालीस वर्ष पहले आए थे। उस समय मोहनलालजी, पूनमचन्दजी, गणेशमलजी आदि कई भाई थे। लोग उन्हें 'सेठ साहब' कहकर पुकारते थे। आज उनमें से कोई नहीं है। उस प्रथम यात्रा के और उसके बाद की यात्राओं के अनेक संस्मरण इस भवन के साथ जुड़े हैं। यहां आते ही बहुत सारी स्मृतियां ताजी हो जाती हैं। यहां पहुंचते ही ऐसा लगता है जैसे अपने घर में आए हैं।'

महाप्रज्ञजी मध्याह्न में कठोतिया भवन से आगे बढ़ गए। उन्होंने रात्रिकालीन प्रवास शालीमार बाग में किया। बीच में कई उपनगरों का स्पर्श किया। हम रात्रि में कठोतिया भवन में रहे।

१२ फरवरी, रविवार को हम प्रीतमपुरा पहुंचे। महाप्रज्ञजी भी आ गए। वहां दिल्लीवासियों द्वारा डी.ए.वी. स्कूल के विशाल प्रांगण में मंगलभावना का कार्यक्रम आयोजित था। कार्यक्रम के अध्यक्ष थे दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना। शिक्षामंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। दोनों महानुभावों ने अपने विचार प्रकट किए। इसी श्रृंखला में दिल्ली तेरापंथी सभा, स्थानकवासी समाज, दिल्ली जैन महासभा, दिल्ली तेयुप, दिल्ली तेरापंथ महिलामंडल, अणुव्रत न्यास, अध्यात्म साधना केन्द्र, प्रवास व्यवस्था समिति आदि संस्थाओं के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री आदि अधिकृत व्यक्तियों ने अपनी-अपनी संस्था का प्रतिनिधित्व करते हुए विचार व्यक्त किए। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मांगीलाल सेठिया ने व्यवस्था से जुड़े सभी व्यक्तियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

दिल्ली के लोगों ने पुनः शीघ्र ही दिल्ली आने का अनुरोध किया। दिल्ली के श्रावक समाज की भावना थी कि हम यहीं रहे। यह यदि संभव न हो तो साधु-साध्वियों को यहां जरूर रखा जाए। प्रस्तुत सन्दर्भ में चिन्तन करके आचार्य महाप्रज्ञ ने मुनि किशनलाल और मुनि सुमेरमलजी (लाडनूं) को दिल्ली में रहने एवं काम करने का निर्देश दिया।

मुनि सुमेरमलजी लम्बी यात्रा करके कलकत्ता से दिल्ली पहुंचे, मुनि सुमेरमलजी की यात्रा के सन्दर्भ में मैंने कहा था 'मुनि सुमेरमलजी कलकत्ता में पांच चातुर्मास करके आए हैं। मैं समझता हूं कि यह एक कीर्तिमान है। कलकत्ता जैसे महानगर में पांच वर्ष रहना और नित्य नूतन बने रहना तथा साथ-साथ वहां की युवापीढ़ी को उत्साहित बनाए रखना बड़ी बात है। इन्होंने वहां अच्छा श्रम किया। यहां तक कि अपनी पीड़ा तक की परवाह नहीं की। ये लाडनूं से सीधे कलकत्ता गए और कलकत्ता से सीधे दिल्ली पहुंचे हैं। विशेष बात यह है कि यहां से जो भी निर्देश मिला, उसका तत्परता से पालन किया।

उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए अपने विदाई सन्देश में मैंने कहा 'अकिंचन सन्त भगवान का सन्देश लेकर घूमते हैं, इसलिए जनता उनके पीछे-पीछे चलती है। मैं भी वही सन्देश लेकर दिल्ली आया था और उसी को फैलाने के लिए ही यहां से प्रस्थान कर रहा हूं। हमारा प्रयास रहता है कि भक्तों को तृप्ति मिले। अपना बलिदान करनेवाले ही भगवान को प्रिय होते हैं। मेरा विश्वास श्रम में है, तपने में है, खपने में है। आज यहां से प्रस्थान करते समय आपसे मैं यही कहना चाहूंगा कि आप अणुव्रत के आधार पर रुग्ण समाज को स्वस्थ करने के लिए अपने श्रम को नियोजित करें।'

लगभग एक सप्ताह का समय उपनगरों में लगाकर हमने हरियाणा की ओर विहार किया। प्रीतमपुरा से रोहिणी, पश्चिमविहार होते हुए हम १४ फरवरी को नांगलोई पहुंच गए। उधर महाप्रज्ञजी प्रीतमपुरा से लोकविहार, मान सरोवर गार्डन, कीर्तिनगर, पंजाबी बाग और पश्चिम विहार का स्पर्श करते हुए नांगलोई आ गए। वहां से मध्याह्न में प्रस्थान कर चार किमी. की दूरी पर स्थित दिल्ली प्रदेश के शिक्षामंत्री श्री साहिबसिंह वर्मा की कोठी पर पहुंचे। श्री वर्मा की हार्दिक इच्छा थी कि एक रात्रि का प्रवास उनके घर पर करें। शिक्षामंत्री की भावना साकार हुई। उन्होंने गांववासियों के साथ इस प्रवास का लाभ उठाया।

१५ फरवरी को हमने बहादुरगढ़ के लिए प्रस्थान किया। हरियाणा की सीमा पर हरियाणा के भाई-बहनों ने स्वागत किया। हरियाणा सरकार के मंत्री मांगेरामजी उस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। दिल्ली से प्रस्थान होते ही भिवानी, रोहतक, हांसी, हिसार आदि क्षेत्रों के लोग समूहबद्ध उपासना करने आ गए। दिल्ली का संघ भी जागरूकता के साथ उपासना का लाभ उठा रहा है। व्यवस्था का दायित्व दिल्ली के कार्यकर्ता वहन कर रहे हैं।

१६ फरवरी को बहादुरगढ़ से चले और १८ फरवरी को रोहतक पहुंचे। वहां दो दिन रहे। स्थानीय लोगों में अच्छा उत्साह रहा। वहां से २० फरवरी को विहार कर २३ फरवरी को भिवानी पहुंचे। स्वागत कार्यक्रम में स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने विचार व्यक्त किए। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्ता का वक्तव्य हुआ। ख्यातिप्राप्त उद्योगपति श्री डी. सी. मंडेलिया, विधायक रामभजन अग्रवाल, श्री रामेश्वरदास शास्त्री आदि को भी अपनी बात कहने का मौका मिला। महाश्रमण और महाप्रज्ञजी बोले। मैंने अपने प्रवचन में जीवनशैली बदलने की प्रेरणा दी।

भिवानी में हमारा प्रवास भोडूका धर्मशाला में हुआ। साध्वियों के प्रवास की व्यवस्था स्थानीय तेरापंथी सभा भवन में थी। २४ फरवरी को मध्याह्न में हम सभा भवन गए। वहां भिवानी का लगभग श्रावक समाज उपस्थित था। पारिवारिक परिचय और सार-संभाल का क्रम चला। नवविवाहित दम्पतियों को गुरुधारणा कराई तथा परिवार में शान्त सहवास की प्रेरणा दी। धार्मिक संस्कारों की सुरक्षा एवं वृद्धि के लिए वहां उपस्थित भाई-बहनों के सामने कुछ बिन्दु प्रस्तुत किए गए

- धार्मिक आस्था को बांटे नहीं, उसे सुदृढ़ बनाएं।
- नमस्कार महामंत्र का नियमित जप किया जाए।
- व्यक्तिगत या सामूहिक रूप में यथासंभव सामायिक की साधना की जाए।
- तेरापंथ समाज में खान-पान की विकृति न आए, ऐसी जागरूकता रहे।
- सप्ताह में कम-से-कम एक दिन सभी तेरापंथी परिवार सभा भवन में अनिवार्य रूप से उपस्थित होकर धर्मोपासना में संभागी बनें।

- सभा भवन की विशेष पहचान होनी चाहिए। इसमें प्रवेश करते ही जैनधर्म और तेरापंथ बोलना चाहिए।
- बच्चों के लिए नियमित रूप से ज्ञानशाला चलाई जाए।
- तेरापंथी श्रावक-श्राविकाएं वर्ष में एक बार गुरुदर्शन का लक्ष्य रखें।
- खान-पान की शुद्धि की दृष्टि विशेष सावधानी की अपेक्षा है। अण्डों के बढ़ते प्रचलन में बच्चों को उनसे बचाना बहुत जरूरी है।
- परिवार के साथ सामूहिक रूप में धर्मानुष्ठान करने से एक वातावरण का निर्माण होता है। इससे छोटे-बड़े सब व्यक्तियों को प्रेरणा मिलती है।

२५ फरवरी को प्रबुद्ध विचार गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी का विषय था तनावमुक्त जीवन कैसे जीएं? महाश्रमण मुदित, महाश्रमणी कनकप्रभा और आचार्य महाप्रज्ञ के वक्तव्य हुए। भिवानी जिले के उपायुक्त श्री सुनील गुलाटी इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि की हैसियत से उपस्थित थे। अपने वक्तव्य के अन्त में उन्होंने कहा 'आचार्यश्री के आगमन को ऐतिहासिक बनाने के लिए मैं भिवानी के प्रसिद्ध हांसी चौक को **'अणुव्रत अनुशास्ता तुलसी चौक'** और लोहड़ बाजार के इस मार्ग को **'अणुव्रत मार्ग'** नाम देने की घोषणा करता हूं।'

हिसार के विधायक श्री ओमप्रकाश जिन्दल और मुख्य अतिथि श्री पी. के. जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री जैन ने कहा 'मैं आपका छोटा-सा भक्त हूं। आपने तीस वर्ष पहले मुझे ऐसे सूत्र बताए, जिनके आधार पर चलने से मुझे शान्ति मिली, सफलता मिली। आज का गृहस्थ जीवन सर्वाधिक तनावपूर्ण बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति में आपके द्वारा दिखाया गया मार्ग ही सुखमय जीवन दे सकता है।'

मैंने अपने प्रवचन में कहा 'मैं तनाव को नहीं जानता, वैसे ही जैसे सूर्य अन्धकार को नहीं जानता। किन्तु तनावग्रस्त लोगों को देख रहा हूं। उनके अनुभव सुनता हूं और तनाव को दूर करने का उपाय भी बता रहा हूं। किन्तु मेरा विश्वास उपदेश की अपेक्षा प्रयोग में अधिक है। संभवतः हमारी लोकप्रियता का यही प्रमुख कारण है। यदि आप सही जीवन जीना चाहते हैं तो यथार्थ को, वस्तुस्थिति को पहचानें। वर्तमान जीवनशैली पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। यह हमारी संस्कृति के अनुकूल नहीं है। टेंशन का इलाज मेडिसिन से नहीं, मेडिटेशन से होना चाहिए।'

मध्याह्न में सांस्कृतिक मंच की ओर से एक विशेष संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का विषय था हिन्दू धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता। इस संगोष्ठी में मुख्य रूप से पत्रकारों एवं बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। अच्छी चर्चा हुई। अणुव्रत के बारे में उपस्थित जिज्ञासाओं को समाहित किया गया।

२६ फरवरी को भिवानी से विहार कर बवानीखेड़ा होते हुए हम १ मार्च को हांसी पहुंचे। श्रेयांस जैन की कोठी पर कुछ समय विश्राम कर एक व्यवस्थित जुलूस के साथ शहर में प्रवेश किया। बहिर्विहारी सिंघाड़ों का आगमन शुरू हो गया। आज साध्वियों के कई वर्गों ने दर्शन किए। महोत्सव जैसा माहौल बन गया। स्वागत कार्यक्रम में अनेक वक्ता बोले। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरियाणा के मंत्री श्री धानुक ने अपने भाषण के अन्त में घोषणा करते हुए कहा हांसी शहर के दो प्रमुख चौक 'अणुव्रत अनुशास्ता तुलसी चौक' और महाप्रज्ञ चौक के नाम से जाने जाएंगे। दो दिन पहले बवानीखेड़ा में भी ठीक ऐसी ही घोषणा वहां के तहसीलदार ने की थी।

उपस्थित जनसमूह को उद्बोधन देते हुए मैंने कहा 'आज के आदमी की निगाहें सत्ता और सम्पदा पर केन्द्रित रहती हैं। राष्ट्र में व्याप्त बुराइयों को रोना सभी रोते हैं। पर उन बुराइयों को पनपाने और बढ़ाने में उन्हीं का हाथ है, यह नहीं सोचते। संसार में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के व्यक्ति होते हैं। मेरी दृष्टि में आज भी अच्छे व्यक्ति ज्यादा हैं। पर वे संगठित नहीं हैं, बुराइयों के प्रतिकार में सजग नहीं हैं। व्यक्ति-व्यक्ति में यह सजगता बढ़े, यही मेरा प्रयत्न है। इसी उद्देश्य से मैं यहां आया हूं। आप लोग अणुव्रत को अपने जीवन में उतारें और सच्चे मनुष्य बनकर जीने का प्रयत्न करें।'

महिला समाज को लक्ष्य करके मैंने कहा 'महिलाएं वर्तमान समस्याओं के प्रति जाग जाएं तो समूचा राष्ट्र

www.terapanthinfo.com

जाग जाएगा। कुछ समय पहले आंध्र प्रदेश में महिलाओं ने शराब के विरुद्ध आवाज उठाई और शराब के ठेके बन्द करवा दिए। मैं कहना चाहता हूं बहनो! जागो, पुरुषों और बच्चों को संभालो, अपना घर स्वस्थ बनाओ।'

हांसी में हम तीन दिन रहे। स्थानीय श्रद्धालु परिवारों को संभाला। प्रतिदिन तीनों समय कार्यक्रम हुए। जैनेतर लोग भी प्रवचन से लाभान्वित हुए। स्थानीय लोगों की प्रार्थना थी हम वहां कुछ अधिक समय रहें। रहने से जागति की संभावना भी थी। पर आगे के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वहां अधिक रहना संभव नहीं बन पाया।

४ मार्च को हम ऊमरा गए। यह श्रद्धा का पुराना क्षेत्र है। अब काफी परिवार बाहर रहने लगे हैं। हांसी-हिसार रहने वाले कुछ परिवार अपने पूर्वजों की जन्मभूमि का गौरव अनुभूति करते हुए ऊमरा आए। स्वागत का कार्यक्रम अच्छा रहा। स्थानीय महिला सरपंच ने गांव के मुख्य चौक का नाम 'तुलसी चौक' रखने की घोषणा की। मैंने हरियाणवी बोली में प्रवचन किया। हरियाणा के लोग स्वयं भी अब हिन्दी बोलने लगे हैं। पर देहाती लोग हरियाणवी में ही बातचीत करते हैं। रात्रि में आसपास के गांवों से ग्रामीण लोग आ गए। अच्छा रंग जमा।

बीदासर से साध्वी मुखदेवांजी के दिवंगत होने का संवाद पाकर मैंने कहा 'साध्वी सुखदेवांजी चूरू के बांठिया परिवार की थी। दीक्षित होने के बाद वे साध्वी ज्ञानांजी के पास रहीं। साध्वी ज्ञानांजी साध्वीप्रमुखा जेठांजी की मरजी साध्वी थीं। वे पापभीरु, शासनभक्त तथा अच्छी साध्वी थीं। साध्वीप्रमुखा जेठांजी के बाद उनका सिंघाड़ा हुआ। साध्वी सुखदेवांजी उनके साथ वर्षों तक रहीं, फिर उनको अगवाणी बना दिया। वे भी वर्षों तक अग्रगामी के रूप में विचरीं, संघीय प्रभावना में अपना योगदान देती रहीं। वे हृदयरोग से ग्रसित हो गईं, इसलिए उन्हें बीदासर समाधिकेन्द्र में रखा। कभी स्वस्थ, कभी अस्वस्थ रहती हुई भी साध्वी सुखदेवांजी सुखपूर्वक अपनी संयम यात्रा का निर्वहण कर रही थीं। बीदासर में समाधिमृत्यु हो गई। दिवंगत आत्मा के भावी आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण सरदारशहर में

उपासक शिविर का समापन

६ अगस्त। आज से पांच दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर प्रारंभ हुआ। मुनि किशनलालजी ने प्रस्तुत संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। आज श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आयोजित दस दिवसीय उपासक शिविर का समापन हुआ। उपासिका बहनों ने मंगल संगान प्रस्तुत किया। श्री सचिन सुराना, प्रकाश सुराना, श्रीमती प्रभा सेठिया, पुखराज सेठिया एवं श्रीमती सरिता श्यामसुखा ने अपने शिविरकालीन अनुभवों को प्रस्तुति दी। श्री डालमचन्द नोलखा ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। मुनि दिनेशकुमारजी और साध्वी जिनप्रभाजी ने उपासक शिविर की निष्पत्तियों की अवगति देते हुए अपने विचार रखे। शिविर प्रभारी श्री विनोद बांठिया ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। आज नगरपालिका चुनाव में खड़े होने वाले अनेक प्रत्याशियों ने नामांकन से पूर्व पूज्यवर से मंगलपाठ सुना।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में लोगों को अपने जीवन में गहराई, निर्मलता और तेजस्वता के विकास की अभिप्रेरणा दी। उपासक शिविर को सार्थक उपक्रम बताते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'उपासक-उपासिकाओं ने निष्ठा के साथ प्रशिक्षण प्राप्त किया है। प्रशिक्षित उपासक निर्देशानुसार संघ का कार्य भी करते हैं। वे निष्ठा के साथ अपना विकास करें। ज्ञान, श्रद्धा, आचार तथा तप की आराधना करते रहें। मनसा, वाचा, कर्मणा धर्मसंघ की सेवा करते रहें तो स्व और पर दोनों के लिए श्रेयस्कर होगा।'

आज चतुर्दशी के दिन आचार्यवर ने हाजरी का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने मर्यादा पत्र की अनेक महत्त्वपूर्ण धाराओं का विश्लेषण करते हुए मर्यादाओं का निष्ठा के साथ अनुपालन की अभिप्रेरणा दी। साध्वी जिनयशाजी

www.terapanthinfo.com

और वैभवयशाजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यवर ने साध्वीद्वय को पांच-पांच कल्याणक से पुरस्कृत किया।

आज ब्यावर और देवगढ़ के संघ अपनी प्रार्थना के साथ उपस्थित हुए। श्री प्रकाशचन्दजी मेहता देवगढ़ तथा श्री महावीर रांका ने ब्यावर की ओर से प्रार्थना करते हुए अपने क्षेत्र के स्पर्श का अनुरोध किया। ब्यावर के श्री मांगीलालजी नोलखा ने १८ दिन के तप का प्रत्याख्यान किया।

दस दिवसीय उपासक शिविर में चालीस शिविरार्थियों ने भाग लिया। मुनि पानमलजी, मुनि किशनलालजी, मुनि श्रेयांशकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि जंबूकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी सविताश्रीजी, साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी चन्द्रिकाश्रीजी, उपासक श्री निर्मल नोलखा, श्री बजरंग जैन एवं निर्मला जैन ने प्रशिक्षण दिया। उपासक-उपासिकाओं को आचार्यवर एवं साध्वीप्रमुखाश्रीजी का निकट सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

१० अगस्त। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा ‘कामना दुःख का प्रमुख कारण है। इससे कर्मों का बंध होता है। कामना की पूर्ति न होने पर व्यक्ति को क्रोध आता है और वह दुःखी बन जाता है। संत पुरुष कामना का त्याग करने वाले होते हैं। जो कामना का परित्याग कर देता है, वह स्थितप्रज्ञ बन जाता है। साधना और ध्यान के प्रयोगों से कामना का परिष्कार और विलय किया जा सकता है।’

बेंगलोर तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में चित्तसमाधि यात्रा के अन्तर्गत ६० बहनों का संघ आज पूज्य चरणों में उपस्थित हुआ। बहनों ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कान्ता जैन ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए।

आज अजमेर, पड़ासली आदि क्षेत्रों के श्रावक समाज ने ससंघ दर्शन किए और अपने क्षेत्र के स्पर्श का अनुरोध किया। बोरावड़ महिला मंडल की बहनों ने अपनी भावनाएं प्रस्तुत करते हुए बोरावड़ पधारने की प्रार्थना की। आज श्रीमती नीता सेठिया ने नौ दिन, वर्षा दूगड़ ने आठ दिन एवं श्रीमती कुसुम बैद ने छह दिन के तप का प्रत्याख्यान किया।

आज टापरा का श्रद्धाशील संकलेचा परिवार आध्यात्मिक संबल पाने के लिए पूज्य चरणों में उपस्थित हुआ। टापरा निवासी श्री मदनलालजी संकलेचा का स्वर्गवास हो गया। आचार्यवर ने उनके संदर्भ में कहा ‘मदनलालजी संकलेचा मुनि दिनेशकुमारजी के संसारपक्षीय भ्राता थे। मुनि दिनेशकुमारजी समझदार एवं संघीय भावना वाले संत हैं। वे गुरुकुलवास के दीपते संत हैं। मदनलालजी श्रद्धालु और सेवाभावी श्रावक थे। धर्म के प्रति अच्छी अभिरुचि थी। वे प्रतिवर्ष अपनी मां के साथ दीर्घकालीन उपासना करते थे। टापरा मर्यादा महोत्सव के प्रति उनके मन में बहुत उत्साह था। उनके आकस्मिक स्वर्गवास से टापरा क्षेत्र के एक अच्छे श्रावक कार्यकर्ता का अभाव हो गया।’ आचार्यवर ने महती कृपा कर श्री मदनलालजी संकलेचा को ‘श्रद्धानिष्ठ’ एवं उनकी मां श्रीमती सुआदेवी को ‘सौम्यमूर्ति’ के संबोधन से संबोधित किया। उल्लेखनीय है परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा उन्हें ‘श्रद्धा की प्रतिमूर्ति’ संबोधन प्राप्त है। पूरा परिवार संस्कारी, आस्थाशील और धर्मसंघ के प्रति समर्पित है।

११ अगस्त। आज परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने धम्मपद पर अपने मंगल प्रवचन में कहा ‘जो व्यक्ति अपने लिए या दूसरों के लिए पुत्र, धन और राज्य की आकांक्षा नहीं करता, नीति और नैतिकता का जीवन जीता है, वह धार्मिक और शीलवान व्यक्ति होता है। एक धार्मिक आदमी के मन में आजीविका में धर्म का लक्ष्य रहे। जहां नैतिकता और प्रामाणिकता हो, शोषण की भावना न हो, वहां धर्म की भावना विकसित होती है।’

नगरपालिका के चुनावों की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा ‘अभी चुनाव का समय है। चुनाव में नैतिकता और प्रामाणिकता रहे। जो पद या सत्ता पर आसीन हो, उसमें जनता की सेवा के साथ नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा की भावना होनी चाहिए।’

www.terapanthinfo.com

प्रवचन के पश्चात् श्रीमती डालचन्दजी चिंडालिया ने आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। साक्षी चिंडालिया ने प्रस्तुत संदर्भ में अपने उद्गार व्यक्त किए।

१२ अगस्त। परमाराध्य आचार्यवर ने प्रातःकालीन प्रवचन में कहा 'संसार एक सागर है। मनुष्य नाविक है। वह शरीररूपी नौका के द्वारा संसार-सागर को पार कर सकता है। जो भोग और दुर्व्यसनों में रत रहता है, वह एक प्रकार से अपनी नौका में छिद्र कर लेता है। छिद्र वाली नौका पर आरूढ़ व्यक्ति का परिणाम क्या होगा, इसे समझा जा सकता है। जो सेवा और तप की साधना में रत रहता है, वह संसार-समुद्र को पार कर लेता है।'

श्रावण मास में निरंतर चल रही तपस्याओं की अनुमोदना करते हुए आचार्यवर ने कहा 'तपस्या कर्म-निर्जरा का बहुत बड़ा साधन है। जो तपस्या करता है, वह अपनी आत्मा को उज्ज्वल बना लेता है। तपस्या के साथ जप, स्वाध्याय और ध्यान का प्रयोग भी करना चाहिए। तपस्या में चौबीसी का स्वाध्याय भी यथासंभव चले।

प्रेक्षा पुरस्कार

आज के कार्यक्रम में मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष द्वारा प्रेक्षा पुरस्कार श्री सोहनलालजी सिंघवी (मुम्बई) को प्रदान किया गया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री विमलकुमारजी नाहटा ने प्रशस्तिपत्र का वाचन कर उसे श्री सिंघवी को प्रदान किया। श्री राहुल कठोतिया ने पुरस्कार राशि का चैक एवं श्री हंसराजजी डागा ने साहित्य उपहृत किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री सुमतिचन्दजी गोठी ने प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से मोमेन्टो भेंट किया। श्री सोहनलालजी सिंघवी ने अपने स्वीकृत भाषण में श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। श्रीमती कान्ता सिंघवी ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। पुरस्कार समर्पण कार्यक्रम का संयोजन श्री अशोक नाहटा ने किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा 'सिंघवीजी उपासक हैं, प्रेक्षा प्रशिक्षक हैं, ज्ञानशाला में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। प्रेक्षा पुरस्कार के लिए इनका चयन सर्वथा उपयुक्त है। ये निष्ठा, मनोबल और आध्यात्मिक भावना के साथ संघ को अपनी सेवाएं देते रहें।'

१३ अगस्त। आज पूज्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में धम्मपद और उत्तराध्ययन के आध्यात्मिक सूत्रों का विवेचन किया। आज के कार्यक्रम में मुम्बई के सूफी संत श्री शफी वासन उपस्थित थे। उन्होंने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए कहा 'अहिंसा यात्रा के समय मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और तेरापंथ धर्मसंघ के साथ निकटता से जुड़ा। मुझे उनका आशीर्वाद और सद्भाव मिला। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा, शान्ति और साम्प्रदायिक सद्भाव का विलक्षण कार्य किया। हमने उनके सान्निध्य में श्रीडूंगरगढ़ में सूफीज्म और जैनिज्म पर सम्मेलन किया। आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में वह कार्य आगे बढ़ता रहेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।'

तेरापंथ सभा प्रतिनिधि सम्मेलन

१४ अगस्त। आज से पूज्यवर के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय सभा प्रतिनिधि सम्मेलन प्रारंभ हुआ। इस सम्मेलन में दो सौ सभाओं के छह सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्यवर के महामंत्रोचार से हुआ। मुनि नीरजकुमारजी ने मंगल गीत का संगान किया। महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूपजी चिंडालिया ने प्रस्तुत सम्मेलन की प्रासंगिकता के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री अशोक नाहटा एवं प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री सुमतिजी गोठी ने आगंतुक प्रतिनिधियों का स्वागत किया। इस अवसर पर श्रीमती कुमुद नोरतनमल बच्छावत ने जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय में निर्माणाधीन कालू कन्या महाविद्यालय के लिए इक्यावन लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की।

शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी ने प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा 'विकास के लिए जड़ों को सींचना आवश्यक है।' मुनिश्री ने सभा प्रतिनिधियों से नशामुक्त जीवन जीने का आह्वान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा 'महासभा धर्मसंघ की सबसे पुरानी संस्था है। इस संस्था के साथ पूरा समाज जुड़ा है। इस सम्मेलन का चिंतनीय बिन्दु है करें चिंतन, कैसे लाएं परिवर्तन। महासभा चिंतन की बात करती है और यह जरूरी भी है।' परिवर्तन के संदर्भो को विश्लेषित करते हुए महाश्रमणीजी ने कहा

- जो अपरिवर्तनीय है, उसे स्वीकार करें।
- जो परिवर्तनीय है, उसमें परिवर्तन करें।
- जो अस्वीकार्य है, उससे अपने आपको हटा लें, अलग कर लें।

क्रान्ति की अपेक्षा को रेखांकित करते हुए महाश्रमणीजी ने कहा 'तेरापंथ समाज परिवर्तन का उदाहरण है। दो सौ पचास वर्ष पहले आचार्य भिक्षु ने एक क्रान्ति की और एक नया पथ प्रशस्त किया। जयाचार्य का परिवर्तन सुधारमूलक परिवर्तन था। आचार्य तुलसी के युग में क्रान्ति भी हुई और सुधार भी हुआ। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन, मेधा, सूझबूझ और साहस ने तेरापंथ को एक नई ऊंचाई दी। अब आचार्य महाश्रमणजी को भी एक क्रान्ति की शुरुआत करनी है।'

सुविधावादी मनोवृत्ति को त्यागने की प्रेरणा देते हुए साध्वीप्रमुखाजी ने कहा 'हमारे विचारों में क्रान्ति के स्फुलिंग आएं। मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए समाज को आगे बढ़ाएं। जो कर रहे हैं, उसकी समीक्षा करें और कुछ नया भी सोचें। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष तक कुछ परिवर्तन दृष्टिगत हों तो कहा जा सकेगा महासभा अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रही है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन की थीम है 'करें चिंतन : कैसे लाएं परिवर्तन।' परिवर्तन में विवेक जरूरी है। परिवर्तन कहां अपेक्षित है, कहां नहीं, इसका विवेक होना चाहिए। जो परिवर्तनीय है, जहां परिवर्तन अपेक्षित है, परिवर्तन वहीं होना चाहिए, अपरिवर्तनीय में नहीं। इसके लिए विवेकयुक्त चिंतन और निर्णय करना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय' यह परिवर्तन का आदर्श वाक्य है। मैं परिष्कार को अधिक महत्त्व देता हूं। हर व्यक्ति चिंतन करे मैं जहां हूं, क्या वहां परिष्कार की अपेक्षा है? परिष्कार करते-करते व्यक्ति ऊंचा उठ जाता है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा समाज की महनीय संस्था है। उसे समाज में परिवर्तन और परिष्कार पर ध्यान देना चाहिए। जो परिवर्तनीय है, उसमें साहस के साथ आगे बढ़ना पड़ता है। साहस का दीप झंझावातों में भी मार्ग प्रशस्त कर देता है।' आचार्यवर ने आगे कहा 'महासभा समाज की मां है। मां अपनी संतान का लाड़-प्यार भी करती है और जरूरत होने पर उसे दंडित भी करती है। जो सहिष्णु बनकर अपना परिष्कार कर लेता है, वह अपना विकास कर सकता है। स्थानीय सभाएं जिन समस्याओं का समाधान न कर सकें, उनको समाधान के लिए महासभा को सौंप दें।'

सभा प्रतिनिधियों को व्यसनमुक्त और चरित्रनिष्ठ बनने की अभिप्रेरणा देते हुए आचार्यवर ने कहा 'तेरापंथ समाज की एक विशिष्ट पहचान है। वह पहचान अपने धर्मसंघ और शास्ता के प्रति पूर्ण समर्पण, अनुशासन और चरित्रनिष्ठा के कारण है। इसमें किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आनी चाहिए। सभा संस्थाओं के पदों पर आने वाले लोगों का नशामुक्त होना जरूरी है। नशामुक्त नहीं हैं तो समझें सभा के पदाधिकारी बनने की अर्हता भी नहीं है। धार्मिक संस्था का अधिकारी बनने के लिए नशामुक्त होना पहली शर्त है।' सम्मेलन में रात्रि भोज के परिहार की अभिप्रेरणा देते हुए आचार्यवर ने कहा 'धर्मसंघ के किसी भी सम्मेलन में रात्रि भोज का सर्वथा वर्जन होना चाहिए। पूज्यप्रवर के इस आह्वान पर तत्काल प्रायः पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों ने रात्रि भोजन का परित्याग कर दिया। आचार्यवर ने कहा 'सम्मेलन में जो प्रतिनिधि संभागी बने हैं, उन्हें जाते समय संतोष की अनुभूति हो, तभी सम्मेलन की सार्थकता है।'

आज के कार्यक्रम में अहमदाबाद सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री मदनलालजी कोठारी ने आचार्यवर से अहमदाबाद यात्रा का अनुरोध किया। श्री कोठारी ने वहां चल रही धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों की अवगति भी दी।

१५ अगस्त। सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का दूसरा दिन। कार्यक्रम का प्रारंभ समणी सत्यप्रज्ञाजी के मंगल संगान से हुआ। महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया ने महासभा की गतिविधियों की जानकारी दी।

www.terapanthinfo.com

समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी ने 'सफल नेतृत्व के घटक तत्त्व' विषय पर अपने विचार रखे। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में 'आराधक श्रावक, कार्यकर्ता श्रावक', प्रभावक श्रावक और विकासयोगी श्रावक' इन चार कसौटियों के आधार पर श्रावक की पहचान को विश्लेषित किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में समाज की युवापीढ़ी को धर्मसंघ से जोड़ने की अपेक्षा पर बल देते हुए कहा 'किशोर और युवावर्ग धर्मसंघ के साथ सक्रियता से जुड़े तो बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में स्वतंत्रता के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा 'आज स्वतंत्रता दिवस है। यह हर भारतवासी के लिए गौरव की अनुभूति का दिन है। आजादी के संदर्भ में एक बात हमेशा याद रहे कि स्वतंत्रता अच्छी है, किन्तु स्वच्छन्दता ठीक नहीं। लोकतांत्रिक प्रणाली को बहुत अच्छा माना गया है। लेकिन कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के अभाव में यह प्रणाली अपने वांछित परिणाम नहीं दे सकती। बहुत जरूरी है, आजाद मुल्क के हर नागरिक में संयम और अनुशासन की भावना जागे।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'तेरापंथ धर्मसंघ में अनुशासन का महत्त्व रहा है। संघ मर्यादा और अनुशासन में चलता है तो निर्बाध स्थिति बनी रहती है। हमारा श्रावक समाज काफी विनीत है। संघ और शास्ता के प्रति श्रावक समाज की अटूट निष्ठा और समर्पण है। उनकी श्रद्धा-भक्ति आत्मतोष की अनुभूति कराती है। श्रावक समाज गुणसंपन्न है। ऐसे सम्मेलनों से एक प्रेरणा मिलती है।'

आचार्यवर ने कुछ प्रमुख करणीय कार्यों के लिए दिशा-निर्देश करते हुए कहा

- **अणुव्रत आन्दोलन के प्रसार में सभाएं मनसा, वाचा, कर्मणा योगदान देती रहें।**
- **ज्ञानशाला एक उपयोगी उपक्रम है। सभाएं इस गतिविधि को संचालित करती हैं। प्रशिक्षण में महिलाओं का भी पूरा योगदान रहता है।**
- **उपासक श्रेणी के विकास पर और ज्यादा ध्यान दिया जाए।**
- **साधु-साध्वियों के रास्ते की सेवा तथा चातुर्मास व्यवस्था की जिम्मेदारी सभा की है।**
- **इस वर्ष चौबीसी सिखाने और बारहव्रती श्रावक बनाने का विशेष प्रयास किया जाए।**
- **समाज के संदर्भ में प्रामाणिकता अधिक अपेक्षित है। अनुदान, दान आदि के कार्यों में पूरी प्रामाणिकता रहे। जिस विसर्जन की घोषणा कर दी, उस पर ममत्व न रहे।**

आज आचार्यवर ने पांच श्रावकों का विशेष उल्लेख करते हुए उन्हें विशिष्ट संबोधन से संबोधित किया। संबोधन प्राप्त श्रावकों के नाम इस प्रकार हैं

१. स्व. श्री भीखाभाई पारिख (माडका)	श्रद्धानिष्ठ
२. स्व. श्री गेहरीलालजी कच्छारा (आमेट)	श्रद्धानिष्ठ
३. स्व. श्री पदमचन्दजी जैन (हिसार)	श्रद्धानिष्ठ
४. श्री मोहनलालजी लोढ़ा (पाली)	श्रद्धानिष्ठ
५. श्री फाऊलालजी बांठिया (पाली)	श्रद्धानिष्ठ

प्रवचन के पश्चात मुमुक्षु शुभम श्यामसुखा (सरदारशहर) ने पूज्यवर से दीक्षा का आदेश फरमाने का अनुरोध किया। आचार्यवर ने अत्यन्त कृपा कर मुमुक्षु भाई को साधु प्रतिक्रमण का आदेश प्रदान किया। आज के कार्यक्रम में चारभुजा निवासी, गोरेगांव प्रवासी श्री बाबूलालजी राठौड़ ने जैविभा को एक वाहन उपहृत किया। श्री राठौड़ ने उसकी चाबी प्रधान ट्रस्टी श्री रणजीतसिंह कोठारी को भेंट की। आज के कार्यक्रम में जोधपुर, छोटीखाटू, तारानगर, डीडवाना, हनुमानगढ़ टाउन, कांकरोली, टिटिलागढ़, पाली, जोधपुर, खिंवाड़ा आदि अनेक क्षेत्रों के लोग ससंघ उपस्थित थे। जोधपुर की ओर से श्री दशरथमलजी भंडारी, श्री मुकुनचन्दजी मेहता ने जोधपुर में प्रवास का अनुरोध किया। आचार्यवर ने अत्यन्त कृपा कर फरमाया 'मारवाड़ यात्रा के दौरान पाली एवं जोधपुर को स्पर्श करने का भाव है।'

कार्यक्रम का संयोजन महासभा के महामंत्री श्री भंवरलालजी सिंघी ने किया।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्री कन्हैयालालजी प्यारचन्दजी चोरड़िया (गोगुन्दा) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचनदेवी, सुपुत्र महेन्द्र, सुनील, सुपौत्र लकी, अर्हम चोरड़िया, सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मदनलालजी संकलेचा (सुपुत्र-स्व. श्री जेसमलजी संकलेचा, टापरा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र दिलीपकुमार, ओमप्रकाश, प्रवीणकुमार, सुपौत्र अक्षय, जिनेश, अमन संकलेचा, सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. संघवी बाबूभाई एवं मुक्तिभाई (वाव) को पूज्यप्रवर द्वारा 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में भीकाभाई, हंसमुखभाई, नवीनभाई, प्रकाशभाई, दीवालीवेन, वीणा, श्रमिष्ठा एवं सुपौत्रों द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. दुलीचन्दजी भंवरीदेवी घीया (सरदारशहर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र बाबूलाल, सुपौत्र विकास, विनीत, प्रपौत्र अर्हम, प्रपौत्री तारन्या घीया, जयपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सरलादेवी घोड़ावत (धर्मपत्नी-श्री रामचन्द्रजी घोड़ावत, सादुलपुर) की पुण्यस्मृति में रामचन्द्र राजकुमार घोड़ावत, ग्वालियर (म.प्र.) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्वर्गीय हरीश पटेल (सुपुत्र-श्री हेमन्तदास पटेल, उज्जैन) की स्मृति में उनके अग्रज ईश्वर, गोवर्धन, कन्हैया, मोहन व लक्ष्मण पटेल द्वारा प्रदत्त।

महात्मा महाप्रज्ञ पुस्तक के संदर्भ में

परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा लिखित **'महात्मा महाप्रज्ञ'** सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रिय पुस्तक है। एक वर्ष में इस कालजयी कृति के आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, फिर भी इसकी मांग ज्यों की त्यों है। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद उनके अन्तिम दिन तक का संपूर्ण विवरण परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस पुस्तक में समाहित करना अपेक्षित समझा, अस्तु इसके पुनर्प्रकाशन में किंचित विलंब हुआ।

महात्मा महाप्रज्ञ पुस्तक अब पूर्णतः संशोधित, परिवर्द्धित और विस्तृत होकर आपके हाथों में आ रही है। हमारा प्रयास रहेगा कि शीघ्रातिशीघ्र इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक को उपलब्ध करा दें।

- विज्ञप्ति का आजीवन सदस्यता अभियान प्रगति पर है और हम लक्ष्य के अत्यन्त निकट हैं। जो विज्ञप्ति के सदस्य नहीं हैं अथवा वार्षिक सदस्य हैं, वे अवसर का लाभ उठाते हुए विज्ञप्ति की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर लें। शुल्क राशि ११००/ अपने यहां आदर्श साहित्य संघ के एकाउंट नं. ०१३३०००१००३६८३५६ (पी.एन.बी.) में जमा देकर बैंक स्लिप के साथ अपना नाम व पूरा पता हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा शिविर कार्यालय सरदारशहर को भिजवाएं। पूज्यप्रवर की उपासना में सरदारशहर जाने वाले भाई-बहन विज्ञप्ति शुल्क और साहित्य क्रय करने हेतु आदर्श साहित्य संघ के बुकस्टॉल पर सम्पर्क करें। आदर्श साहित्य संघ, जैन विश्वभारती और अमृतवाणी के स्टॉल प्रवचन पण्डाल के परिपार्श्व में स्थित हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है–

कमलेश चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पो. सरदारशहर-३३१४०३, जि. चूरू (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१, दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१
नोरतनमल दूगड़ (अध्यक्ष) फोन : ९२१४५१२३४६, बच्छराज कठोतिया (मंत्री) फोन : ९३११२३४६४१
E-mail : AdarshSahityaSangh@yahoo.com

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११० ००२ के लिए बच्छराज कठोतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११० ०३२ से मुद्रित। सम्पादक : **कमलेश चतुर्वेदी।**

www.terapanthinfo.com